'प्रथम बिहार अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' के समापन समारोह में
महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविंद का सम्बोधन

(दिनांक – 21..08.2016, समय–04:00 बजे अप॰, अधिवेशन हॉल, सिंचाई भवन परिसर)

'प्रथम बिहार अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' के समापन समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित राज्य के कला–संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री श्री शिवचन्द्र राम जी, लेडी गवर्नर श्रीमती सविता कोविन्द जी, भारत में जर्मनी के कॉन्सिलेट जेनरल मिस्टर ओलाफ इवर्सेन्ट, विकास आयुक्त श्री शिशिर सिन्हा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री चंचल कुमार, कला–संस्कृति एवं युवा विभाग के प्रधान सचिव श्री चैतन्य प्रसाद, फिल्म डेवेलोपमेन्ट कॉरपोरेशन के प्रबंध निदेशक श्री गंगा प्रसाद, समारोह में उपस्थित फिल्म प्रेमियों, प्रेस प्रतिनिधियों, देवियों एवं सज्जनों !

'प्रथम बिहार अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' के समापन–समारोह में उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। ऐसे भव्य समारोह के आयोजन के लिए मैं कला–संस्कृति व युवा विभाग तथा बिहार राज्य फिल्म विकास एवं वित्त निगम को बधाई देता हूँ । इस आयोजन के फलस्वरूप आप अपने शहर में ही बैठे–बैठे विश्व के तीन महानतम संस्कृति–प्रधान देशों की बेहतरीन फिल्मों का अवलोकन करने में सफल रहे। इस महोत्सव के दौरान आपने फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन भाषाओं में बनी कई फीचर, डॉक्यूमेंट्री एवं लघु फिल्मों का आनंद लिया है। इस क्रम में आपको सम्बन्धित देशों की कला–संस्कृति और सामाजिक सरोकारों से परिचित होने का सुअवसर मिला होगा।

मित्रों, आप सभी अवगत हैं कि सिनेमा वह सशक्त माध्यम है, जो न केवल आपको मनोरंजित करता है, बल्कि कभी–कभी आपको कुछ ऐसे विषयों पर सोचने को विवश भी करता है, जो व्यापक रूप से सामाजिक और राष्ट्रीय हितों से जुड़े होते हैं । सिनेमा में सीधे–सीधे आपको प्रभावित करने की क्षमता है । दूसरे अर्थों में सिनेमा को कला का समग्र स्वरूप माना गया है, जो यथार्थ भी है । मैं यह कह सकता हूँ कि इस प्रकार के 'अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' का महत्व तब और भी बढ़ जाता है, जब फिल्म देखने के साथ–साथ उस फिल्म और संस्कृति से जुड़े विचारकों के अनुभवों और चिन्तनों का भी लाभ आप तक पहुँचाने की कोशिश की जाती है । मुझे उम्मीद है कि आपको इस समारोह के माध्यम से फिल्मी दुनिया से संबंधित पूरी वैचारिक खुराक भी मिली होगी ।

सिनेमा–जगत् में बिहार का इतिहास भी रेखांकित करने योग्य रहा है । आपको मालूम ही होगा कि विश्वप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित फिल्म 'गाँधी' की अधिकांश शूटिंग बिहार में ही हुई थी । उस फिल्म में पटना रंगमंच के दर्जनों कलाकारों ने भी अभिनय किया था । इस फिल्म को 'ऑस्कर अवार्ड' से नवाजा गया था । देवानन्द अभिनीत फिल्म 'जॉनी मेरा नाम' का एक मशहूर गाना– 'ओ मेरे राजा खफा न होना'– जो हेमा मालिनी जी और देवानन्द जी पर फिल्माया गया था, बिहार के राजगीर में 'शूट' किया गया था । सत्यजीत राय द्वारा निर्देशित एक फिल्म, जिसका नाम 'अभिजान' था, उसकी शूटिंग भी ऐतिहासिक पटना कॉलेज परिसर में हुई थी । इस फिल्म की अभिनेत्री वहीदा रहमान जी ने अपने संवाद में बिहार की आंचलिक भाषा का भी प्रयोग किया था । राजकपूर की 'तीसरी

कसम' फिल्म को किसने नहीं देखा होगा ? उसमें फिल्मायी गई बिहार की आंचलिक संस्कृति पूरी दुनिया में सराही गयी ।

बिहार की आंचलिक भाषाओं में बनी फिल्मों का इतिहास भी पांच दशक पुराना है । मुझे खुशी हो रही है कि बिहार का कला–संस्कृति विभाग तथा बिहार फिल्म विकास निगम बिहार में फिल्म उद्योग के विकास की संभावनाएँ तलाशने में सकारात्मक रूप से तत्पर दीख रहे हैं । इस सुन्दर और सुसंस्कृत प्रयास के लिए मैं इन दोनों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ ।

मुझे बताया गया है कि पहली बार राज्य में 'बिहार अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' का आयोजन इसबार किया गया है, जिसका आज भव्य समापन हो रहा है । उम्मीद है, यह महोत्सव लम्बे समय तक याद किया जायेगा और आगे भी ऐसे आयोजन होते रहेंगे, जिनसे राज्य में फिल्म उद्योग के विकास की संभावनाएँ बढ़ेंगी । बिहार में कतिपय ऐतिहासिक और प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थल हैं, कला– प्रतिभाएँ हैं, मशहूर संगीतकार और गायक हैं, कलाकार हैं, फिल्म–निर्माता और निर्देशक हैं । भारतीय फिल्म उद्योग के हर प्रक्षेत्र में बिहार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । पूरा देश बिहारी फिल्मी प्रतिभाओं का कायल रहा है । फिर बिहार में फिल्म–उद्योग का विकास भला क्यों नहीं हो सकता ? आज आवश्यकता है कि दृढ़ निश्चय के साथ सबका सहयोग प्राप्त करते हुए चरणबद्ध रूप में समुचित प्रयास किये जायें ।

मैं फ्रांस, जर्मनी और स्पेन से आये हुए मेहमानों के प्रति भी मैं अपनी तथा बिहारवासियों की तरफ से कृतज्ञता प्रकट

करता हूँ , जिन्होंने यहाँ पधारकर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ायी है । इस फिल्म महोत्सव का लक्ष्य सिर्फ विभिन्न देशों के सिनेमाओं का प्रदर्शन करना ही नहीं रहा है, बल्कि उन देशों की कला–संस्कृतियों का प्रदर्शन भी इसका सार्थक उद्देश्य रहा है । इस 'अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' से विश्व सद्भाव और मैत्री संदेश भी पूरी दुनिया में गया है । दूसरे अर्थों में, इस महोत्सव को एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्रों के बीच संस्कृतियों के सेतु के रूप में भी देखा जाना चाहिए ।

यह मेरा सौभाग्य है कि बिहार 'अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव' के प्रथम वर्ष का मैं साक्षी बन रहा हूँ । मुझे पूरा विश्वास है कि यह महोत्सव विश्व के प्रतिष्ठित एवं चर्चित महोत्सवों के बीच अपनी पहचान बनायेगा । इसी आशा और विश्वास के साथ महोत्सव से जुड़े तमाम अधिकारियों एवं उनके सहयोगियों को मैं पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ । आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद ।

जय हिन्द !

.***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।